आओ चलें सम्पूरणता की और .....

03 / 11 / 14 की मुरली से

- स्वमान :-

√ मैं आत्मा महादानी हूँ ।

- गुण / धारणा / अभ्यास पर अटेंशन :-

√ अटल-अखंड

- बाबा से सम्बन्ध का अनुभव :-

√ सतगुरु

- मनन चिंतन :-

√ सर्व खजानों से संपन्न बन निरंतर सेवा करने की क्या विधि है ?

@ शिवभगवानुवाच :-

→_→ रोज रात को सोने से पहले बापदादा को पोतामेल सच्ची दिल का दे दिया तो धरमराजपुरी में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ।

- होमवर्क :-

- Total Marks :- 50 -

- पॉइंट 1 To 7 के 5 मार्क्स हैं -

- पॉइंट 8 के 15 मार्क्स हैं -

(1) आत्मा भाई-भाई का पाठ पक्का किया ?

(2) "यह ड्रामा अनादी-अविनाशी है"- यह स्मृति में रहा ?

(3) बुधी में याद रहा- "हम थोड़े समय के लिए संगम युग में बैठे हैं" ?

(4) किसी भी एक आत्मा को कर्म-अकर्म-विकर्म की गुह्य गति सुनायी ?

(5) किसी भी एक आत्मा को अल्फ का पाठ पक्का करवाया ?

(6) निरंतर सहज सेवाधारी बनकर रहे ?

(7) स्वभाव में सरलता रही ?

@ बापदादा (12/10/2014) :-

→_→ सफलता तो आपका जन्म सिद्ध अधिकार है । अच्छा चल रहा है, अच्छा चलता रहेगा |

(8) "सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है |" - आज पूरा दिन यह स्मृति बनी रही ?

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले होमवर्क के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

● मनन चिंतन :-

√ सर्व खजानों से संपन्न बन निरंतर सेवा करने की क्या विधि है ?

➢ आत्मा आत्मा भाई भाई के अल्फ़ का पाठ पक्का करे।
➢ परमत की जगह श्रीमत पर सम्पूर्णता हासिल कर श्रेस्ठ आत्मा बनने का पुरुषार्थ करे।
➢ संसार में जो कुछ भी हो रहा है उसे अनादी व् बना बनाया ड्रामा स्वीकार कर निश्चिंतता व् संतुष्टता धारण कर ले।
➢ बेहद के बाप को जो भूल बेठे है उन्हें फिर से बाप का परिचय दे और कर्म विकर्म व् अकर्म का ज्ञान दें।
➢ बेहद के बाप से मिले गीता पाठ को शास्त्रमई सिरोमणि स्वीकार कर उनकी सम्पूर्णता से पालना करनी है।
➢ वानप्रस्थ अवस्था में स्थित रहते गृहस्त से किनारा करना है।
➢ बेहद के बाप की पढाई पढ़ नम्बरवार पुरुषार्थ कर श्रेस्ठ पद पाना है।
➢ बाप से मिले ख़ुशी के खजाने को सबके बीच बाटकर महादानी बनना है।
➢ स्वभाव में सरलता रखते अपने में सच्चाई व् सफ़ाइ प्रत्यक्ष करे।

ॐ शांति।